RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-10
October-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i10.009

मुगल काल में शिक्षा का विकास (1526–1707)

सत्यजीत कुमार

(एम.ए.) हिन्दू कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय

भारत में शिक्षा प्रणाली का अस्तित्व प्राचीन काल से ही है, ऋग्वेद, अर्थशास्त्र, एवं अन्य महत्वपूर्ण साहित्यिक एवं ऐतिहासिक ग्रंथों से यह प्रमाणित होता है। परंतु मध्यकालीन भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना के साथ ही विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों की व्यवस्था से शैक्षिक विकास को बल प्राप्त हुआ। 1206 में सल्तनतकालीन राजाओ ने मकतबों और मदरसो का निर्माण कराया तथा पुस्तकालयों शैक्षिक संगठनों की स्थापना की। इल्तुतमिश प्रथम शासक था, जिसने मध्यकाल में दिल्ली में मदरसो की स्थापना की, जिसका मुख्य, उद्देश्य विद्वानों को नागरिक प्रशासन तथा न्याय संबंधी कार्यो के निर्वहन हेतु प्रशिक्षित करना था। इस लेख में बाबर से हुमायूँ, अकबर तथा जहागीर से और औरंगजेब तक मुगल सम्राटो के अधीन शिक्षा के क्रमिक विकास को दिखाने का प्रयास किया गया है। मुस्लिम शिक्षा व्यवस्था के अधीन मुगल काल में प्रचलित मुस्लिम शिक्षा, उसकी शिक्षण पद्धति, सामान्य विशेषताएँ, विद्यालयों के प्रकार, दण्ड व्यवस्था पुरस्कार व्यवस्था, शुल्क व्यवस्था, गुरू–शिष्य संबंध आदि का विवरण प्रस्तुत किया गया है।मकग भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना के साथ ही मुस्लिम शिक्षा ने भारत भूमि पर पदार्पण किया। तुर्क अथवा मुस्लिम विजेताओं ने मुस्लिम शासन की स्थापना क साथ–साथ इस्लाम धर्म के प्रजा क लिए शिक्षा को साधन के रूप में प्रयोग किया। मुस्लिम शिक्षा का आधार धर्म था अतः मस्जिद से संबंद्ध मकतब, मदरसे, सूफी संतो से खानकाहो द्वारा शिक्षा दी जाती थी। मकतबों मे प्रारंभिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। मुगलो से पूर्व खानकाहे भी अस्तित्व में थी, जो शिक्षा प्रदान करने वाले प्रमुख माध्यमों में से एक थी। खानकाहो में आध्यात्मवाद अथवा रहस्यवाद की शिक्षा प्रदान की जाती थी। कुशन, हदीस, शरीअत, सुनत और कयास इस्लामी शिक्षा के मुख्य आधार स्तंभ थे। इस्लामी शिक्षा बहुउद्देशीय थी, लेकिन मध्यकाल में इस्लामी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य कुराण में वर्णित सिद्धांतों के आधार पर मुनष्य एवं ईश्वर के मध्य के संबंधों को समझना था। इस्लामी शिक्षा के पाँच उद्देश्य अथवा लक्ष्य मान जा सकते है। प्रथम, मुस्लिमों में ज्ञान की वृद्धि करना। दूसरा, इस्लाम धर्म का प्रचार करना। तीसरा उद्देश्य इस्लामिक सिद्धांतों के अनुसार सदाचार की एक विशिष्ट प्रणाली का विकास करना था। इस्लामिक शिक्षा का चौथा और पाँचवा उद्देश्य भौतिक उनति करना और राजनैतिक लक्ष्य की पूर्ति करना था।

मुगलकालीन शिक्षा के लक्ष्य वही है, जो सल्तनत काल में शिक्षा के मौलिक लक्ष्य थे। यद्यपि इसमें बदलती हुई राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों के कारण कुछ परिवर्तनशील प्रवृतियाँ भी दृष्टिगोचर होती है। साथ ही इस नए वातावरण से सामन्जस्य करने के प्रयास के कारण भी मुगलकालीन शिक्षा के आधारभूत लक्ष्यों में उदारता के कुछ लक्षण प्रकट होते है। अकबर के शैक्षणिक सुधारो के कारण भी परंपरागत इस्लामिक शिक्षा के लक्ष्यों में एक नया मोड़ आया, अब इसका लक्ष्य विशुद्ध धार्मिक से विशुद्ध राजनैतिक हो गया।

बाबर का संबंध एक सुशिक्षित परिवार से था। बाबर की शिक्षा पर उसके परिवार की महिलाओं का गहरा प्रभाव पड़ा था। बाबर की माँ स्वयं एक विद्वान महिला थी तथा तुर्की फारसी भाषा में दक्ष थी। उसकी दादी 'इंसान दौलत बेगम' भी एक सुसंस्कृत महिला थी जिसने बाबर पर उसकी माँ के अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण प्रभाव डाला था। मुगल सम्राट बाबर स्वयं एक विद्वान, कवि, लेखक और गायक था। उसकी आत्मकथा 'बाबरनामा' एक अद्वितीय ग्रंथ है। परंतु अपने अल्पवधि शासनकाल में शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए कुछ अधिक नहीं कर सका।

बाबर ने अपने समय में साहित्यिक व्यक्तियों के प्रोत्साहन के साथ–साथ शिक्षा के विकास के लिए अन्य कार्य भी किया। सेयद मकबर अली, जो बाबर का प्रधानमंत्री था, उसकी तवारीख से ज्ञात होता है कि बाबर ने 'शुहरत–ए–आम'(सार्वजनिक निर्माण विभाग) को निर्देश दिया कि अन्य कार्यो के साथ गजट प्रकाशित करने और मकतब तथा मदरसो के निर्माण पर भी पूरा–पूरा ध्यान दे। इससे सहज रूप से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि बाबर को शिक्षा के प्रसार में पर्याप्त रूचि थी। उसने दिल्ली में एक मदरसे की स्थापना की थी। जिसमें परंपरागत इस्लामिक विषयों के साथ गणित, ज्योतिष, और भूगोल पढ़ाने की भी व्यवस्था थी। इस्लामिक शिक्षा का स्वरूप मस्जिदो में भी दिखाई देता था इसलिए बाबर के समय में निर्मित 'काबुली बाग मस्जिद' पानीपत में और रूहेलखंड क्षेत्र में संभल की जामा मस्जिद है जो उस काल के शिक्षा की ओर इंगित करती

RRIJM 2015, All Rights Reserved

है। भारत में सर्वप्रथम राजकीय पुस्तकालय की स्थापना करने वाला सम्राट बाबर था।

बाबर ने भारत में भाषा के विकास की ओर ध्यान दिया जो शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रयास था। बाबर ने स्वयं एक लिपि शैली का अविष्कार किया था जिसे 'बाबरी लिपी' कहा गया है। इस लिपि में उसने कुराण की प्रति तैयार कर मक्का शरीफ भेजी थी। बाबर ने शिक्षा के विकास के क्रम में विद्यालयों, महाविद्यालयों के भवनों को जन–सेवा विभाग के अंतर्गत सम्मिलित किया जो कि आधुनिक समय में लोक निर्माण विभाग (पी.डब्लू.डी.) के समान था। उसके शासन काल में शैक्षणिक क्रिया कलापो को आर्थिक सहायता भी प्रदान की जाती थी, परंतु शैक्षणिक संगठनों में राज्य का प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नहीं था। बाबर के समय में व्यावसायिक शिक्षा के रूप में पत्थर काटने की तकनीकी के बारे में जानकारी दी जाती है उस समय में आगरा, सिकरी, बयाना, धौलपुर, ग्वालियर और अलीगढ़ आदि क्षेत्रों में लगभग 4099 पत्थर काटने वाले लोग कार्यरत थे। वह मुख्य रूप से हिंदुस्तान के लोगों का व्यवसाय ओर पेशा बन गया था।

मुगल वंश का द्वितीय बादशाह नासिरूद्दीन मुहम्मद हुमायूँ था जो बाबर का उत्तराधिकारी था। हुमायूँ के प्रारंभिक शिक्षकों में ख्वाजा किलान और शेख जैनुद्दीन प्रमुख थे। हुमायूँ ने इन शिक्षकों के अधीन लिखना पढ़ना, तुर्की, फारसी, अरबी भाषा इतिहास और धर्म साहित्य में विशेष अध्ययन किया। महिउद्दीन रूहुल्ला और मौलाना इलियास भी उसके अध्यापक थे।

हुमायूँ के शासनकाल में सुप्रसिद्ध कवियों के नाम जैसे गुलबदन बेगम एवं कामरान, मौलाना बहीएद्दीन वजीद, मौलाना जैमकी, बैरम खाँ, काही, ताहिर आदि प्रचलित थे। हुमायूँ की रूचि विषय संबंधित पाठ्यक्रमों में भी थी। उसमें अपने शासनकाल में अनेक विषयों को पाठ्यक्रमों में सम्मिलित करने का आदेश दिया था। उसके समय में भाषा के रूप में तुर्की, अरबी, फारसी को पाठ्यक्रम के रूप में सम्मिलित करने का प्रयास किया था। भूगोल, गणित, ज्योतिष शास्त्र, नक्षत्र शास्त्र, इतिहास विषय में उसकी रूचि विशेष थी। जिन्हें मदरसों के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया।

हुमायूँ ने शिक्षा के विकासक्रम में कुछ प्रमुख निर्माण कार्य भी करवाया था। उसकी विशेष अभिरूचि नक्षत्र शास्त्र में थी इसलिए नक्षत्र शास्त्र, अथवा भूगोल में शिक्षा प्रदान करने हेतु उसने एक विद्यालय की स्थापना करवायी थी। हुमायूँ की इच्छा विभिन्न स्थलों पर वेधशालाओं का निर्माण करने की थी तथा इस उद्देश्य के लिए विभिन्न प्रकार के यंत्रों का निर्माण भी करवाया था। इस विभिन्न प्रकार के यंत्रों में एक 'उस्तुर्लाब–ए–हुमायूँनी' भी था। जिसके मुख्य अभियन्ता शेख अललाह दाद थे।

इस काल में सर्वाधिक प्रसिद्ध दिल्ली में हुमायूँ का गुम्बज का निर्माण हुआ था पश्चात् में यह महाविद्यालय में परिवर्तित हो गया। उसने एक खानकाह का निमाध्र किया था जो श्रोताओं के बारह वर्गों में विभक्त था जिसमें से प्रत्येक अपने संबंधित नक्षत्र के नाम पर आधारित था। हुमायूँ ने दीनपनाह नगर को बसाया था। इस नगर के बारे में इतिहासकारों का मानना है कि इसका शिलान्यास अप्रत्यक्ष रूप में सफावी अत्याचार एवं धार्मिक उत्पीड़न की आटोमन नीति के प्रति हुमायूँ की कठोर अवज्ञा को प्रदर्शित करते हैं। इस 'दीनपनाह' नगर में सूफी सन्तों का धार्मिक वाद–विवाद था।

हुमायूँ अपने शासनकाल के दौरान शिक्षा व्यवस्था का विस्तृत वर्गीकरण किया था। योग्यता पद तथा श्रेणी के अनुसार विभिन्न कक्षाओं की व्यवस्था की गई थी। सम्राट ने शिक्षा के लिए सप्तान के दिवसों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया था। वृहस्पतिवाद एवं शनिवार को वह अपने महल में विद्वानों से भेंट करता था तथा वैज्ञानिक एवं साहित्यिक चर्चाओं में समय व्यतीत करता था। रविवार एवं मंगलवार का क्रमशः सूर्य संबंधित विषय एवं बहादुर सैनिकों पर चर्चा होती थी। सोमवार को मंगल ग्रह पर चर्चा होती थी।

अकबर – अकबर के शासनकाल में शिक्षा के विकास की कड़ी में मकतब एवं मदरसों का निर्माण हुआ। अकबर की धाय माता माहम अनगा विद्यानुरागी महिला थी। शिक्षा के क्षेत्र में उनका अनुकरणीय योगदान रहा है। उन्होंने 1561 में दिल्ली में एक मदरसा का निर्माण करवाया जो 'खैर उल मंजिल' या मदरसा–ए–बेगम' के नाम से माना जाता है। यह एक आवासी संस्था थी। इस मदरसे के दूसरी मंजिल में विद्यार्थी निवास करते थे। इस मदरसे के शेख अब्दुल्ला प्रसिद्ध शिक्षक थे। स्वयं अकबर ने भी कुछ मदरसों एवं विद्यालयों का निर्माण करवाया था। अकबर ने फतेजपुर सीकरी में विशाल विद्यालय की स्थापना की थी। उसने फतेहपुर सीकरी में 1578 में एक 'इबादत खाने' का निर्माण करवाया। इसमें सभी धर्मों के बारे में वाद–विवाद आयोजित होती थी। अकबर ने जयोतिषों के साथ चर्चा करने के लिए फतेहपुर सीकरी में ही ज्योतिष बैठक के नाम से भव्य भवन का निम्रण किया था। अकबर ने कई पुस्तकों का अनुवाद भी करवाया। अकबर के प्रयासों में 'सिंहासन बत्तीसी' 'हैवात उल हैवान' अथर्ववेद, किताब उल अरादीस, तारीख–ए–अल्फी रामायण, महाभारत, लीलावती आदि संस्कृत एवं अरबी ग्रंथों का फारसी में अनुवाद हुआ। अकबर ने पुस्तकों के अनुवाद एवं साहित्यिक विकास की दृष्टि से एक अनुवाद विभाग खोला।

अकबर के शासनकाल में उच्च शिक्षा विद्यार्थी को मदरसे में प्रदान की जाती थी। उच्च शिक्षा के लिए व्यवस्थित पाठ्यक्रम लागू किया गया था। अबुल फजल लिखता है कि प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आवश्यक है कि वह नीति शास्त्र, अंकगणित, अंकों का चिह्नों द्वारा प्रदर्शन या चित्रण, कृषि, ज्यामिति, रेखा गणित, ज्योतिषशास्त्र, गृह विज्ञान,, शासन व्यवस्था, चिकित्सा शास्त्र, तर्क शास्त्र, संगीत, विज्ञान एवं इतिहास का ज्ञान धीरे–धीरे प्रापत करें। अकबर ने संस्कृत के

विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम में व्याकरण, वेदांत तथा पातंजलि का अध्ययन करने की व्यवस्था की। उसने शिक्षा को व्यावहारिक बनाने पर विशेष बल दिया।

अकबर ने तकनीकी शिक्षा को भी उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया था। कारखाना हेतु संस्थागत विभाग की स्थापना हुई जिसमें दो शाही अधिकारी 'दीवान–ए–वुयुवात' और 'मीर समां' नियुक्त थे। अकबर ने संगीत शिक्षा की ओर भी विशेष ध्यान दिया था। अबुल फजल ने लिखा है कि सम्राट अकबर ने संगीत पर विशेष रूप से ध्यान दिया उसने अपने राज्य में सभी संगीतकारों को प्रश्रय प्रदान किया। 1556 में अकबर से रीवा के राजा ने तानसेन का परिचय कराया था। अकबर ने तानसेन को मिर्जा की उपाधि से विभूषित किया। अकबर के समय में मुस्लिम बलिकाओं को प्रारंभिक शिक्षा बालकों के साथ एक ही विद्यालय में दी जाती थी किन्तु जैसे ही वह व्यस्क होने लगती थी, उन्हें बालकों से अलग कर दिया जाता था। अधिक संख्या में मुस्लिम बालिकाएँ पर्दा प्रथा के कारण उन्हीं विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करती थी जो विशेष रूप से बालिकाओं के लिए खोले जाते थे। मुगल सम्राट अकबर के अधीन शाही हरम की स्त्रियों को शिक्षा देने की व्यवस्था की गई थी।

वास्तव में अकबर ने शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी भूमिका अदा किया। अपने शैक्षणिक प्रयासों से उसने आने वाले शासकों के लिए पथ–प्रदर्शक का कार्य किया। जिस प्रकार शाहजहाँ का शासनकाल स्थापत्य कला के लिए स्वर्ण काल माना जाता है उसी प्रकार अकबर का शासनकाल (1556–1605) मुगलकालीन शिक्षा विकास के लिए स्वर्ण काल माना जा सकता है।

जहाँगीर – उसके काल में चित्रकला को सर्वाधिक महत्त्व दिया जा रहा था। उसने चित्रकला के विकास के लिए अनेक योग्य चित्रकारों को प्रश्रय दिया। जहाँगीर अपनी आत्मकथा में लिखता है कि, मेरी चित्रकला के प्रति रूचि तथा पहचानने में निपुणता इस सीमा तक पहुँच गई थी कि जब किसी मृत अथवा आज के चित्रकारों का कोई भी चित्रक बिना उसका नाम बताए मेरे सामने आता है तो मैं तुरंत ही बता देता हूँ कि यह चित्र अमुक चित्रकार का है।

जहाँगीर के दरबार में सुप्रसिद्ध चित्रकार हेरात का आगा रियाज था। जहागीर के दरबार के अन्य चित्रकारों में विसनदास, मुहम्मद नादि, मुहम्मद मुराद, मनोहर माधव तथा गोवर्धन के नाम उल्लेखनीय हैं इसलिए पर्सी ब्राउन ने जहाँगीर को 'मुगल चित्रकला की आत्मा' कहा है। तारीख–ए–जान' से ज्ञात होता है कि उसने ऐसे कई मदरसों की मरम्मत करवाई थी, जो तीस वर्षों से पशु–पक्षियों का निवास बने हुए थे। उसने एक नियम बना दिया था कि यदि कोई व्यक्ति निःसंतान ही स्वर्गावास हो जाए तो उसका संपति राज्य की मानी जाएगी और उसका उपयोग मदरसे के निर्माण और उनका जीर्णोधार करने में किया जाएगा।

शाहजहाँ के शासनकाल में फारसी साहित्य का विकास हुआ। हिंदी और फारसी साहित्य का विकास हुआ। हिंदी और फारसी भाषा तथा अन्य विषय के विद्वान व्यक्ति इनके दरबार में विद्यमान रहते थे। शाहजहाँ के दरबार में प्रसिद्ध संस्कृत कृति रसगंगाधर के लेखक जगन्नाथ पंडित ने आसफ खाँ की प्रशंसा में आशफ विकास नामक काव्य की रचना की शाहजहाँ भवनों के निर्माण कार्य के लिए प्रसिद्ध था और स्थापत्य कला को अपने जीवन का महत्वपूर्ण अंग माना था इसी क्रम में उसने शाही पुस्तकालय के निर्माण और विकास में रूचि दिखलाई थी।

शाहजहाँ शिक्षा के प्रचार हेत प्रत्यनरत् था। बनारसी प्रसाद सक्सेना ने लिखा है कि इस काल में कश्मीर शिक्षा का प्रमुख केंद्र था पुरोहितों द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं के प्रमुख केंद्र थे। लाहौर, अहमदाबाद, बुरहानपुर, जौनपुर। इसके काल में प्रसिद्ध विद्वान सरहिन्द, थानेश्वर तथा अम्बाला में रहते थे। सुदुर क्षेत्रों से विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करने आते थे।

औरंगजेब पूर्ण रूप से धार्मिक कट्टर व्यक्ति था। वह हिंदुओं को काफर कह कर पुकारता था। इसलिए संस्कृत भाषा एवं साहित्य पर विशेष ध्यान नहीं दिया। एक प्रकार से उसके शासनकाल में संस्कृत साहित्य पूर्ण रूप से अवरूद्ध हो गया था। औरंगजेब ने शिक्षा के विकास में विभिन्न प्रकार के विद्वानों को प्रमुख भी दिया था। पुराने समय से चले आ रहे परंपरा को इसने परिवर्तित कर दिया। औरंगजेब ने तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था की कटु आलोचना की और उसे अव्यवहारिक बतलाया। औरंगजेब ऐसी शिक्षा चाहता था जो व्यवसायिक और व्यवहारिक हो, जिससे जीवन में ज्ञान–विज्ञान की उपलब्धि हो और जीवन की समस्या का निराकरण हो पर दुर्भाग्य से औरंगजेब ने ऐसी शिक्षा व्यवस्था के लिए कुछ नहीं किया।

औरंगजेब के काल में धर्म शिक्षा का आधार बना दिया गया और निर्माण कार्य में मस्जिद एवं मदरसों को वरीयता दी गई। हिंदू मंदिरों एवं शिक्षणालयों को ध्वस्त करके उनके स्थान पर मस्जिद एवं मदरसा बनाया गया। औरंगजेब ने अपने शासनकाल में ललित कला (संगीत) की शिक्षा पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगा दिया था। इतना ही नहीं उसने संगीतकारों को राजदरबार से निकाल दिया। वह चित्रकला की शिक्षा को इस्लाम विरोधी समझता था।

निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि शिक्षा के विकास में अकबर द्वारा स्थापित परंपराओं का उसके पुत्र सम्राट जहाँगीर और पौत्र शाहजहाँ के समय में अनुपालन होता रहा। ये दोनों शासक विधानुरागी थे। दोनों ने विद्वानों कवियों एवं साहित्यकारों को संरक्षण, मदरसों के निर्माण, संगीत, चित्रकला तथा वास्तुकला के क्षेत्र में तथा विविध शैक्षणिक गतिविधियों को प्रोत्साहन प्रदान किया। शाहजहाँ का पुत्र द्वारा शिकोह अपने समय का योग्य, तीक्ष्ण बुद्धि एवं सर्व धर्म संभाव वाला व्यक्ति था। उसने एक राजकुमार के रूप में शिक्षा की

RRIJM 2015, All Rights Reserved

ओर सर्वाधिक ध्यान दिया। शिक्षा के क्षेत्र में उसका महत्वपूर्ण कार्य हिंदू धर्म के ग्रंथों को फारसी भाषा में अनुवाद करना था।

औरंगजेब ने अपनी धर्मान्धता के कारण अपने पूर्ववर्ती शासकों द्वारा स्थापित हितकारी और स्वस्थ नीतियों और परंपराओं को तिलांजलि दे दी जिसका परिणाम स्वयं मुगल साम्राज्य को भुगतना पड़ा। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह स्वयं एक उच्च शिक्षा प्राप्त और ज्ञान विज्ञान का उपासक और प्रचारक था, किन्तु एक कट्टर मुसलमान होने से उसकी विचारधारा संकीर्ण थी। उसने सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को इस्लामिक कानून एवं सिद्धांत के आधार पर खड़ा करने का प्रयत्न किया। इसका दुष्परिणाम हिंदू शिक्षण संस्थानों को भुगतना पड़ा।

संदर्भ सूचीः–

1. स्मिथ, वी.ए., अकबर दि ग्रेट मोगल् (1542–1605)
2. श्रीवास्तव, आशीर्वादी लाल, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति
3. हुसैन युसुफ, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति : एक झलक
4. जाफर, एस.एम., एजुकेशन इन मुस्लिम इण्डिया
5. प्रसाद, ईश्वरी, द लाइफ एंड टाइम्स ऑफ हुमायूँ
6. रे. कृष्णलाल, एजुकेशन इन मेडिवल इंडिया
7. सहाय, बी.के., एजुकेशन एण्ड लर्निंग अंडर द ग्रेट मुगल्स
8. प्रसाद, बेनी, हिस्ट्री ऑफ जहांगीर

RRIJM 2015, All Rights Reserved